बैद्यनाथ
असली आयुर्वेद

Baidyanath

ASLI AYURVED

PRODUCTS LIST

एरंड पाक

घटक द्रव्य:

शुंठी, एरंड बीज , गोदुग्ध ,काली मिर्च, पीपल ,दालचीनी, इलायची ,तेजपत्ता, नागकेशर, पीपरामूल ,चित्रक मूल ,कपूर ,बेल, अजवाइन, जीरा सफेद, जीरा काला, हल्दी, दारू हल्दी ,अश्वगंधा, खरैंटी , विडंग ,पुष्करमूल, गोखरू, त्रिफला, देवदारु, बबूल ,काली विधारा ,शतावरी, एलवा इत्यादि।

चिकित्सीय उपयोग:

इसके सेवन से आमवात ,कटिवात, वस्तीवात , सूजन, उदरशूल आदि रोगों में विशेष लाभ होता है। यह वात नाशक दवा में अपना प्रधान स्थान रखता है। इसके सेवन से खाया हुआ भोजन हजम हो जाता है और पेट साफ होता है।

संदर्भ:

योग रत्नाकर

सेवन मात्रा:

6 से 12 ग्राम तक गर्म दूध या पानी के साथ लें

कंटकार्यावलेह

घटक द्रव्य:

छोटी कटेली, गिलोय , वंशलोचन ,चित्रक मूल, नागर मोथा ,काकासिंगी , काकड़ा सिंगी, पीपल ,मिर्च ,सोंठ, तिल तेल, घी गाय का दूध एवं शहद इत्यादि

चिकित्सीय उपयोग:

इसके सेवन से श्वास ,कास, हिचकी, कफ आदि रोगों में लाभ होता है। खांसी चाहे सुखी हो या गीली दोनों में लाभदायक है। सूखी खांसी में छाती में जमे हुए कफ को बाहर निकालता है और गीली खांसी में दूषित नवीन कफ नहीं बनने देता।

संदर्भ:

शारंगधर संहिता

सेवन मात्रा:

6 ग्राम से 12 ग्राम सुबह शाम उचित अनुपान के साथ

आइटम कोड:

10010

कुटजावलेह

घटक द्रव्य:

मंजिष्ठा ,बेल धातकी, नागरमोथा ,अनार, अतिविषा, लोध्र ,मोचरस ,रसांजन ,धनिया ,खस और सुगंधबाला

चिकित्सीय उपयोग:

इसके प्रयोग से अतिसार ,संग्रहणी व प्रवाहिका मैं लाभ होता है।

संदर्भ:

भैषज्य रत्नावली

सेवन मात्रा:

4 से 6 ग्राम शहद के साथ मिलाकर प्रातः एवं शाम इसका सेवन करें

आइटम कोड:

10011

च्यवनप्राश अवलेह

घटक द्रव्य:

बेल की छाल ,अरणी ,अरलू, गंभारी, पाटला, मधुपर्णी ,माषपर्णी , पीपल ,शालपर्णी पृश्निपर्णी , गोखरू ,छोटी कटेली, बड़ी कटेली, काकड़ा सिंगी, भुई आंवला ,मुनक्का ,जीवंती, पुष्करमूल ,अगर ,गिलोय ,बड़ी हरड़ , बला, वाराही कंद, विदारीकंद, नागर मोथा, पुनर्नवा, शतावरी, छोटी इलायची, कमल, सफेद चंदन, अडूसे की जड़, अश्वगंधा ,काकनासा एवं आंवला इत्यादि

चिकित्सीय उपयोग:

च्यवन ऋषि इसे खाकर बूढ़े से जवान हो गए थे अतः इसका नाम च्यवनप्राश हुआ। आयुर्वेद शास्त्रों के अनुसार यह फेफड़े को मजबूत करता है ,दिल को ताकत देता है, पुरानी खांसी और दमा में बहुत फायदा करता है एवं पेट भी साफ करता है। वीर्य विकार , स्वप्नदोष में लाभकारी है। एवं बल, कांति शक्ति और बुद्धि को बढ़ाता है, दुबले और कमजोर व्यक्तियों को यह पुष्ट बनाता है।

संदर्भ:

शारंगधर संहिता

सेवन मात्रा:

6 ग्राम से 12 ग्राम प्रातः समय गाय बकरी के दूध के साथ सेवन करें

चवनप्राश स्पेशल

Buy 1 kg & Get FREE 200 g Chyawanprash

Buy 500 g & Get FREE 4 Ayudant Worth ₹20/-

Buy 250 g & Get FREE 3 Ullas Pouch Worth ₹15/-

घटक द्रव्य:

बेल की छाल ,अरणी ,अरलू, गंभारी, पाटला, मधुपर्णी ,माषपर्णी , पीपल ,शालपर्णी पृश्निपर्णी , गोखरू ,छोटी कटेली, बड़ी कटेली, काकड़ा सिंगी, भुई आंवला ,मुनक्का ,जीवंती, पुष्करमूल ,अगर ,गिलोय ,बड़ी हरड़ , बला, वाराही कंद, विदारीकंद, नागर मोथा, पुनर्नवा, शतावरी, छोटी इलायची, कमल, सफेद चंदन, अडूसे की जड़, अश्वगंधा ,काकनासा एवं आंवला पीपल, दालचीनी, इलायची, तेजपत्ता, नागकेशर, लवंग, वंशलोचन, शुक्ति भस्म ,अभ्रक भस्म, मकरध्वज, चांदी का वर्क इत्यादि

चिकित्सीय उपयोग:

इस स्पेशल च्यवनप्राश में साधारण चवनप्राश के योग से अतिरिक्त मकरध्वज ,अभ्रक भस्म, शुक्ति भस्म, चांदी की वर्क आदि विशिष्ट गुणकारी द्रव्यों के मिलाया जाता है जिससे इसके गुणों में अत्यंत वृद्धि हो जाती है और यह शीघ्र लाभ भी करता है तथा इसमें मकरध्वज और अभ्रक भस्म जैसे द्रव्यों का मिश्रण होने से इसका लाभ भी

संदर्भ:

आयुर्वेद सार संग्रह

सेवन मात्रा:

6 ग्राम सुबह शाम शहद मिलाकर या गुनगुने दूध के साथ इसका सेवन करना चाहिए

आइटम कोड:

10005

चित्रक हरीतकी

घटक द्रव्य:

चित्रक, आंवला, गिलोय ,दशमूल ,गुड ,त्रिकटु ,दालचीनी
,इलायची इत्यादि

चिकित्सीय उपयोग:

पुराने और बार बार होने वाले जुकाम मैं इसके सेवन से अच्छा लाभ होता है। इसके अलावा यह खांसी,

संदर्भ:

आयुर्वेद सार संग्रह

सेवन मात्रा:

6 ग्राम सुबह शाम गाय के दूध के साथ दें

आइटम कोड:

10003

द्राक्षावलेह

घटक द्रव्य:

द्राक्षा ,लवंग, काली मिर्च, पीपल, मुलेठी, शुंठी , आंवला ,दूध, केसर ,जाती फल ,इलायची, तेजपत्ता, दालचीनी एवं कमलगट्टा इत्यादि

चिकित्सीय उपयोग:

खून की कमी, कब्ज में उपयोगी। इसके सेवन से भूख बढ़ती है एवं यकृत विकार भी दूर होते हैं.

संदर्भ:

रसतंत्रसार व सिद्ध प्रयोग संग्रह

सेवन मात्रा:

10 से 20 ग्राम गुनगुने दूध व शहद के साथ सुबह शाम

आइटम कोड:

10006

बादाम पाक

घटक द्रव्य:

बादाम, घी,, मिश्री, बंग भस्म, जायफल, जावित्री ,त्रिकटु ,प्रवाल पिष्टी, दालचीनी, तेजपत्ता, इलायची ,केसर,विदारीकंद, कौंच बीज ,सफेद मूसली ,सलाम मिश्री एवं वंशलोचन इत्यादि।

चिकित्सीय उपयोग:

उपयोग दिमाग व हृदय की कमजोरी एवं शुक्र विकारों में उपयोगी। इसके सेवन से नेत्र वा शिरो रोगों में भी लाभ होता है एवं शरीर पुष्ट होता है। सर्दियों में इसका सेवन विशेष रूप से करना चाहिए।

संदर्भ:

आयुर्वेद सार संग्रह

सेवन मात्रा:

भोजन के बाद दो बार पानी की बराबर मात्रा के साथ 3 से 4 चम्मच वाले।

आइटम कोड:

10002

मूसली पाक

घटक द्रव्य:

सफेद मूसली, त्रिकटु, त्रिजात ,,शतावरी ,चित्रकमूल, गोखरू ,अश्वगंधा, हरड़ ,लवंग, जायफल ,जावित्री, तालमखाना, खरैटी बीच, कौंच बीज, सेमल गोंद , कमल गट्टा, वंशलोचन ,अकरकरा, सफेद चीनी, मकरध्वज एवं बंग भस्म इत्यादि

चिकित्सीय उपयोग:

यह अत्यंत बाजी कारक और पुष्टिकारक है। इसके सेवन से धातु दौर्बल्य में लाभ होता है। शरीर स्वस्थ, कांति युक्त एवं पुष्ट बनता है। स्त्रियों में प्रदर रोग तथा पुरुषों में वीर्य दोषों के लिए यह एक उपयोगी औषधि है।

संदर्भ:

आयुर्वेद सार संग्रह

सेवन मात्रा:

6 ग्राम से 12 ग्राम दूध या जल के साथ

आइटम कोड:

10012

वासावलेह

घटक द्रव्य:

वसाका की जड़ ,पीपल ,घी एवं मिश्री

चिकित्सीय उपयोग:

यह सब तरह की खांसी ,श्वास, रक्तपित्त आदि रोगों में उपयोगी है। पुरानी कफज खांसी कीये बड़ी ही उपयोगी दवा है।

संदर्भ:

आयुर्वेद सार संग्रह

सेवन मात्रा:

6 ग्राम से 12 ग्राम सुबह-शाम शहद या अन्य उचित अनुपान के साथ दें

आइटम कोड:

10015

सुपारी पाक

घटक द्रव्य:

कपूर ,तेजपत्ता ,पुदीना ,नागर मोथा, पीपल, खुरासानी अजवायन, तालीसपत्र, वंशलोचन, जावित्री ,सफेद चंदन, काली मिर्च, जायफल, सफेद, जीरा ,लवंग ,धनिया पीपरामूल ,नीलोत्पल ,सिंघाड़ा ,शतावरी ,नागकेसर, बादाम, पिस्ता ,मुनक्का, मिश्री एवं सुपारी

चिकित्सीय उपयोग:

यह पाक अत्यंत बाजी कारक और पुष्टिकारक है इसके सेवन से स्त्रियों में प्रदर रोग में लाभ होता है। प्रदर रोग के कारण स्त्री का स्वास्थ्य समस्याएं जैसे कमर पीठ दर्द, सिर में दर्द, हाथ पैरों में दर्द इत्यादि समस्याओ में यह औषधि उपयोगी है।

संदर्भ:

आयुर्वेद सार संग्रह।

सेवन मात्रा:

6 ग्राम 12 ग्राम सुबह-शाम गाय के दूध के साथ सेवन करें

आइटम कोड:

10014

सौभाग्य शुंठी पाक

घटक द्रव्य:

शुंठी , शतावरी, विदारीकंद, सफेद मूसली, गोखरू, बला, गिलोय ,दालचीनी ,छोटी इलायची ,तेजपत्ता ,अजवाइन ,तालीसपत्र, अजमोदा , रास्ना ,पुष्करमूल, वंशलोचन, देवदारु, सोयाबीन, जटामांसी, वचा ,मोचरस ,तेजपत्ता ,नागकेसर ,जावित्री ,मेथी ,मुलेठी, सफेद चंदन ,लाल चंदन, विडंग, धनिया, जायफल एवं नागर मोथा इत्यादि

चिकित्सीय उपयोग:

इस पाक का प्रयोग करने से बल और आयु की वृद्धि होती है। यह उत्तम पुष्टिकारक है। यह औषधि स्त्रियों में प्रदर रोग मैं लाभदायक है एवं पुरुषों के लिए बल वीर्यवर्धक है।

संदर्भ:

आयुर्वेद सार संग्रह

सेवन मात्रा:

6 ग्राम से 12 ग्राम तक सुबह शाम रोग के अनुसार गुनगुने दूध या जल के साथ दें

हरिद्रा खंड

घटक द्रव्य:

त्रिफला ,त्रिकटु, निशोथ, नागर मोथा ,अजवाइन, कुटकी,चित्रक, इलायची दालचीनी, जीरक, धनिया, अजमोदा ,शर्करा, लौह भस्म एवं अभ्रक भस्म इत्यादि

चिकित्सीय उपयोग:

इसके सेवन से शीतपित्त, चकत्ते ,खुजली, पांडु रोग, शोथ इत्यादि रोग नष्ट होते हैं। यह मृदु विरेचक होने के कारण कोष्ठ शुद्धि भी करता है।

संदर्भ:

आयुर्वेद सार संग्रह

सेवन मात्रा:

6 ग्राम से 12 ग्राम तक जल के साथ

आइटम कोड:

10008

हरीतकी खंड

घटक द्रव्य:

त्रिफला ,नागर मोथा ,दालचीनी ,छोटी इलायची, तेजपत्ता, नागकेसर ,अजवाइन, त्रिकटु ,धनिया, सौंफ ,सोयाबीन ,लवंग ,निशोथ, सनाय पत्ती, हरड़, मिश्री या चीनी इत्यादि

चिकित्सीय उपयोग:

इसके सेवन से समस्त प्रकार के शूल रोग नष्ट होते हैं। विशेषकर अम्लपित्त उपयोगी है। इसके अतिरिक्त अर्श , वात रोग और कटिशूल में उपयोगी है। यह उत्तम विरेचक भी है।

संदर्भ:

भैषज्य रत्नावली

सेवन मात्रा:

6 ग्राम से 12 ग्राम बल अनुसार गर्म दूध या गर्म जल के साथ दें

आइटम कोड:

10009